बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
बाँदा - २१०००१ (उ0प्र0)
Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 134 /2025) Year: 7th

जिला: बाँदा	जारी करने की तिथि: 13.08.2025

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	➢ उठी हुई मेड़ियों पर अथवा उठी हुई क्यारियों में कद्दू वर्गीय फसलों यथा लौकी, करेला, खीरा, तरोई, आदि, भिंडी, लोबिया, ग्वार, चौलाई की बुआई कर दें। सफल खरपतवार एवं नमी प्रबंधन हेतु मेड़ियों को काली पॉलीथिन से ढकना चाहिए। ➢ बैगन, टमाटर, मिर्च की नर्सरी डाल दें तथा खड़ी फसलों में खरपतवार प्रबंधन करें। ➢ मिर्च, टमाटर, बैगन, भिंडी में सफेद मक्खी व अन्य चूसने वाले कीट आने की संभावना है अतः उपयुक्त कीटनाशी से पादप सुरक्षा करें।
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	**शस्य-प्रबंधन** • जुलाई वर्षा का प्रधान माह है। मानसून की सक्रियता के कारण वातावरण का तापक्रम कम हो जाता है और सापेक्षिक आर्द्रता कम हो जाती है। खरीफ फसलों की बुआई और अन्य कृषि कार्यों के लिये जुलाई सबसे महत्वपूर्ण महीना है। • अरहर की कम समय में पकने वाली किस्मों की बुआई जुलाई के प्रथम सप्ताह में करें । एक हेक्टेयर के लिये 18–20 किग्रा0 बीज की आवश्कता पड़ती है। • मूंग एवं उड़द की जल्दी तैयार होने वाली किस्म का चुनाव करें तथा मध्य जुलाई तक बुआई सम्पन्न करें। बुआई हमेशा कतारों में 30 सेमी की दूरी पर करें। • सभी दलहनी फसलों के बीज बुआई पूर्व उचित राइबोजियम कल्चर से अवश्य उपचार करें। • मध्य जुलाईतक तिल की बुआई करें। तिल की उन्नत किस्मों के प्रमाणित बीज बुआई करें। प्रति हेक्टेयर 5–7 किलो बीज दर से पर्याप्त होती है। • बुआई कतारों में 30 सेमी0 का फसला रखकर 2–3 सेमी0 की गहराई पर करें। पौधे से पौधे की बीच की दूरी स्थापित कर लेवें। • श्रीअन्न फसलों की बोआई यथाशीघ्र पूर्ण करें। बोआई हमेंशा अच्छे जल निकास वाली हल्की मृदाविन्यास वाली भूमि में करें। बुआई कतारों में 30 सेमी0 का फसला रखकर 2–3 सेमी0 की गहराई पर करें। पौधे से पौधे के बीच की दूरी १० सेमी स्थापित कर लेवें। जहाँ तक संभव हो श्रीअन्न फसलों की बोआई १२० सेमी चौड़ाई के उठे हुए बीज सय्या पर करें। दो बीज सय्या के मध्य ३० सेमी गहरी नाली बनाना सुनिश्चित करें। • धान की सीधी बोआई एवं रोपित दोनों में खरपतवार निकलना /नियंत्रित करना सुनिश्चित करें । रोपित फसल में रोपाई के तुरंत बाद प्रेटीलाक्लोर नामक

		खरपतवार नाशी की 2 किग्रा मात्रा का प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। दोनों प्रकार के धान में 3-4 सप्ताह की अवस्था पर बिस्पायरीबैक सोडियम नामक खरपतवार नाशी की 100 ग्राम मात्रा का प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। ध्यान रहे छिड़काव हमेशा प्रयाप्त मृदा नमी की दशा में फ्लैटफैन नोजल से करें। **मृदा-प्रबंधन** ➢ खरीफ में बोई जाने वाली दलहन फसलों में 20:60:20, तिलहन फसलों में 90:50:30 एवं धान में 80:60:40 किग्रा0 एनपीके प्रति हे0 प्रयोग करें। ➢ वर्षा के दौरान होने वाले मृदाक्षरण एवं मृदा कटाव को रोकने हेतु अपने – अपने खेतो का मेड बंधान लगातार करतें रहें। ➢ फासफोरस एवं पोटाष की पूरी मात्रा तथा नत्रजन की आधी मात्रा बुवाई के समय तथा नत्रजन की षेष मात्रा खडी फसल में प्रयोग करें। ➢ विगत में मिट्टी परीक्षण हेतु भेजे गये मृदा नमूना परीक्षण की रिपोर्ट एकत्र कर नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से चर्चा कर खरीफ फसलो हेतु फसलानुसार उर्वरको की व्यवस्था अभी तक अगर न की हो तो अविलम्ब करें। ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवश्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। ➢ बागवानी फसलों में पौधे की उम्र एवं आवश्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	वर्षा ऋतु में पशुपालकों को ध्यान रखने योग्य बातेंः ➢ पशुओं को बाँधने के स्थान (पशुशाला) की छत को साफ व दुरुस्त रखें जिससे पानी का रिसाव न हो। ➢ वर्षा के मौसम में सभी पशुओं को अन्तः परजीवीनाशक दवाई अवश्य देवें क्यूंकि इस ऋत ु में अन्तः परजीवी जैसे कृमि इत्यादि कई गुना वृद्धि दर के साथ पशुओं में होते हैं। ➢ वाह्यपरजीवी जैसे मक्खी, चिचिड़ी, जूँ इत्यादि का प्रकोप भी वर्षा ऋतु में बढ़ जाता है। जिसके बचाव हेतु कीटनाशक का छिड़काव पशुशाला में नियमित अंतराल पर करते रहें। साथ ही पशुशाला के निकट खरपतवार एवं घास इत्यादि न बढ़ने दें। ➢ पशुओं के दानेचारे के भण्डारगृह में भी नमी तथा पानी के जमाव से बचाना चाहिए अन्यथा दाने एवं चारे इत्यादि में कवक एवं फफूंद की वृद्धि हो सकती है और ऐसा भोजन पशुओं को देने से यह पशुओं में कैंसर का कारण भी बन सकता है। अतः यह सुनिश्चित करें की पशुओं की भोजन सामग्री सूखी जगह में संग्रहीत करे।
4–	**कीट-प्रबंधन**	➢ खड़ी फसलों तथा सब्जियों में नीम तेल @ 5 मिली प्रति ली पानी के घोल का छिड़काव करें इससे उपचारित खेतों को टिड्डियां कम नुकसान करती हैं। ➢ धान की नर्सरी में कीट के नियंत्रण हेतु फसल की साप्ताहिक निगरानी करना चाहिये एवं आवश्यकतानुसार नीम तेल @ 5 मिली प्रति ली पानी के घोल का छिड़काव करें । ➢ सब्जियों की फसलों में रस चूसने वाले व फल बेधक कीट के जैविक नियंत्रण हेतु एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत ई0सी0 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर

		पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से छिड़काव करें अथवा चार प्रतिशत नीम गिरी एवं 0.5 मिली0 लीटर स्टिकर (चिपकने वाला पदार्थ) प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर छिड़कने से जैसिड, सफेद मक्खी व मिली बग का प्रकोप कम हो जाता है।
5-	**पादप रोग प्रबंधन**	किसानों को फसलों में होने रोगों से बचाव हेतु निम्नलिखित सलाह दी जाती है: **धान (रोपित फसल):** ब्लास्ट- पत्तियों और गर्दन पर धब्बे शीथ ब्लाइट- तने के नीचे सफेद फफूंद बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट (BLB) - पत्तियों का जलना व किनारे से पीला होना ➢ ब्लास्ट के लिए: ट्राइसाइक्लाजोल 75 WP @ 0.6 ग्राम/लीटर या इसोप्रोथियोलैन @ 1.5 मिली/लीटर का छिड़काव करें। ➢ शीथ ब्लाइट के लिए: हेक्साकोनाजोल 5% SC @ 2 मिली/लीटर छिड़काव करें। ➢ बैक्टीरियल रोग के लिए: स्ट्रेप्टोसाइक्लिन @ 0.01% + कॉपर ऑक्सीक्लोराइड @ 0.25% का छिड़काव करें। ➢ खेतों में जलभराव न होने दें। **मक्का** लीफ ब्लाइट (पत्तियों पर लम्बे भूरे धब्बे) स्टॉक रॉट (तनों का गलना) ➢ कार्बेन्डाजिम + मैंकोजेब @ 2 ग्राम/लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। ➢ फसल में उचित वायुसंचार बनाए रखें। **अरहर** फ्यूजेरियम विल्ट पत्ती धब्बा रोग ➢ बीज उपचार: ट्राइकोडर्मा @ 10 ग्राम/किग्रा की दर से बीज शोधन करें। ➢ पत्तियों के धब्बों के लिए: मैनकोजेब 75 WP @ 2.5 ग्राम/लीटर का छिड़काव करें। ➢ अच्छी जल निकासी रखें। **सब्जियां (भिंडी, टमाटर, लौकी, करेला, मिर्च आदि):** झुलसा रोग डाउनी मिल्ड्यू, पाउडरी मिल्ड्यू बैक्टीरियल स्पॉट, मोजेक **झुलसा और फफूंद जनित रोग:** ➢ मैन्कोजेब + मैटालैक्सिल (रिडोमिल गोल्ड) @ 2 ग्राम/लीटर का छिड़काव करें। **बैक्टीरियल रोगों के लिए:** ➢ स्ट्रेप्टोसाइक्लिन @ 0.01% + कॉपर ऑक्सीक्लोराइड @ 0.3% का छिड़काव करें। **फलदार पौधे (नींबू, आम, अमरूद):** एन्थ्रेक्नोज, गोंद बहाव रोग, लीफ स्पॉट ➢ कापर ऑक्सीक्लोराइड @ 3 ग्राम/लीटर का छिड़काव करें। ➢ कार्बेन्डाजिम @ 1 ग्राम/लीटर का छिड़काव करें। ➢ रोगग्रस्त शाखाओं की छंटाई कर नष्ट करें। **सामान्य सुझाव** ➢ खेतों में जलभराव से बचें – जलनिकासी सुनिश्चित करें।

		➢ फसल चक्र और रोग-प्रतिरोधी किस्मों का चयन करें। ➢ रोगग्रस्त पौध भागों को खेत से निकालकर नष्ट करें। ➢ ट्राइकोडर्मा, पेनिसिलियम, या अन्य जैविक उत्पादों का उपयोग करें। ➢ मौसम के अनुसार समय पर छिड़काव करें।
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	बागवानी वाली फसलों में अनेक कृषि कार्य जुलाई महीने में किये जाते है जैसे–फलदार पौधों की रोपाई, मूलवृन्त तैयार करने के लिए फल बीज की नर्सरी में बुवाई, जल निकास की व्यवस्था, खाद अवं उर्वरक प्रबंधन, खरपतवार प्रबंधन, अन्तरवर्ती फसलों की बुवाई, जल निकास की व्यवस्था, फल पौधों में कटिंग, कलम चढ़ाना, बारिश में लगने वाले प्रमुख कीट एवं रोग प्रबंधन इत्यादि कार्य किये जाते है **कुछ सामान्य ध्यान देने वाली बातें** ➢ फलदार वृक्ष जैसे आम, अमरुद, निम्बू, अनार, बेर, बेल ,इमली इत्यादि के पौधों के रोपाई का कार्य किसान भाई अवस्य शुरु कर दें । ➢ किसान भाई पौध लगाने से पहले प्रत्येक गढ्ढे की मिटटी में में २०–२५ किलोग्राम सड़ी गोबर की खाद एवं एक किलोग्राम सुपर फास्फेट अवस्य दाल द। ➢ गुणवत्ता युक्त पौध तैयार करने के लिए मूलबृन्त की आवश्यकता होती है जिसके लिए फलों के बीज की बुवाई नर्सरी में अवस्य कर दें। ➢ अत्याधिक वर्षा के नुकसान से बचाने के लिए फल बागानों में सिचाई के लिए बनाई गई नालियों को जल निकास के काम में लेना चाहिए। ➢ पोषक तत्व प्रबंधन के अंतर्गत छोटे फल पौधों में ५० ग्राम नत्रजन प्रति पौधा आयु के हिसाब से देना चाहिए । ➢ फल देने वाले पौधों को जिंकसल्फेट (200 ग्राम/पौधा) तथा बोरोन (100 ग्राम/पौधा) देना चाहिए । ➢ **आम में मुख्य कृषि कार्य** ➢ आम के संस्तुत पूरी खाद एंड आधी उर्वरक की मात्रा का प्रयोग करें। ➢ नए बाग लगाने हेतु पौध रोपाई का कार्य प्रारम्भ करे। ➢ आम में गूटी बांधे । ➢ आम में कलम बांधने का कार्य किसान भाई शुरू कर दे । ➢ मूलवृन्त तैयार करने के लिए आम के गुठलियों का रोपण नर्सरी में करना चाहिए। **नींबू वर्गीय फलों में मुख्य कृषि कार्य** ➢ नींबू सन्तरा अवं मोसम्बी के प्रत्येक पौधे को 20–30 किलोग्राम सड़ी गोबर के खाद, 1–2 किलोग्राम यूरिया , 1–2 किलोग्राम सिंगल सुपर फास्फेट तथा 0.5 – 0.6 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति वर्ष देना चाहिए । ➢ मूलवृन्त तैयार करने हेतु रंगपुर लाइम, जट्टी–खट्टी के बीज की बुवाई नर्सरी में करें। ➢ नींबू में गूटी बांधने का कार्य करे। ➢ सन्तरे अवं मौसम्बी में कलिकायन चढाने का कार्य करें। **पपीते में मुख्य कृषि कार्य** ➢ पित्त शिरा मोजैक विषाणु के नियंत्रण हेतु पौधों के छोटी अवस्था में ही विषाणु को फैलाने वाले कीटों (एफिड) का नियंत्रण एमिडाक्लोरोप्रिड (0.5 मिली/लीटर पानी) के छिड़काव से करें । ➢ पौध तैयार करने के लिए नर्सरी में उन्नतशील किस्मों के बीज जैसे– रेड लेडी, ताइवान, पूसा नन्हा, अर्का प्रभात इत्यादि के बीज के बुवाई करें। **अमरुद में प्रमुख कृषि कार्य** ➢ अमरुद में गुटी एवं परस्पर सम्बन्ध विधि से पौध तैयार करने का कार्य करें । ➢ नए बाग का रोपण करते समय उन्नतशील प्रजातिओं जैसे – लखनऊ–49, संगम, श्वेता, ललित, इत्यादि चयन करें। ➢ मूलवृन्त तैयार करने के लिए नर्सरी में बीजों के बुवाई करें। **आँवला में प्रमुख कृषि कार्य** ➢ काली फफूद के प्रकोप से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत घुलनशील गंधक का छिड़काव करें । ➢ जुलाई माह में उन्नतशील प्रजातियों जैसे– चकैया, कंचन, कृष्णा, बनारसी इत्यादि का रोपण करें । ➢ मूलवृन्त तैयार करने के लिए फलों के बीजो को नर्सरी में बुवाई करें । ➢ नए पौध बनाने के लिए कलिकायन चढाने का कार्य करें।

		बेर में प्रमुख कृषि कार्य ➢ पूर्व में तैयार गढ्ढों में पौध रोपण करें। ➢ छोटे बागों के बीच में हरी खाद हेतु ढैचा, सनई इत्यादि की बुवाई करें । ➢ नए पौध तैयार करने के लिए रूपांतरित छल्ला कलिकायन विधि का प्रयोग करें । **चीकू में प्रमुख कृषि कार्य** ➢ चीकू में कलम बांधने का कार्य करें । ➢ मूलवृन्त तैयार करने नर्सरी में खिरनी के बीज की बुवाई करें।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ वानिकी पौधशाला में विक्रय हेतु तैयार पौधों की ग्रेडिंग लंबाई व मोटाई के आधार पर करें। ➢ अगले वर्ष रोपण हेतु क्यारियों व पॉलीबैग में महुआ, जामुन, नीम, आम, करौंदा, कटहल, कचनार, चिरौंजी, अमलतास, पलास, गुलमोहर, कैजुरिना के बीज की बुआई करें। बीज को बोने से पहले एक रात्रि तक पानी में भिगोकर रखें तथा प्रत्येक पॉलीबैग में 2–3 बीज की बुआई करें। ➢ जून माह के रोपित पौधों के थालों में निराई गुड़ाई करें। ➢ जुलाई माह में अच्छी वर्षा के उपरान्त ही वृक्षारोपण का कार्य करें। ➢ बरसात की संभावना को देखते हुए किसान भाई नर्सरी में जल निकास की उचित व्यवस्था बनायें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार	7. डॉ दिनेश गुप्ता
2. डॉ दिनेश साह	8. डॉ पंकज कुमार ओझा
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	10. डॉ जगन्नाथ पाठक
5. डॉ राकेश पाण्डेय	11. डॉ धर्मेन्द्र कुमार
6. डॉ मयंक दुबे	